ISBN: 978-93-86906-74-8
IMPRINT: BAHUVACHAN

NATURE & WILDLIFE
₹595 HB

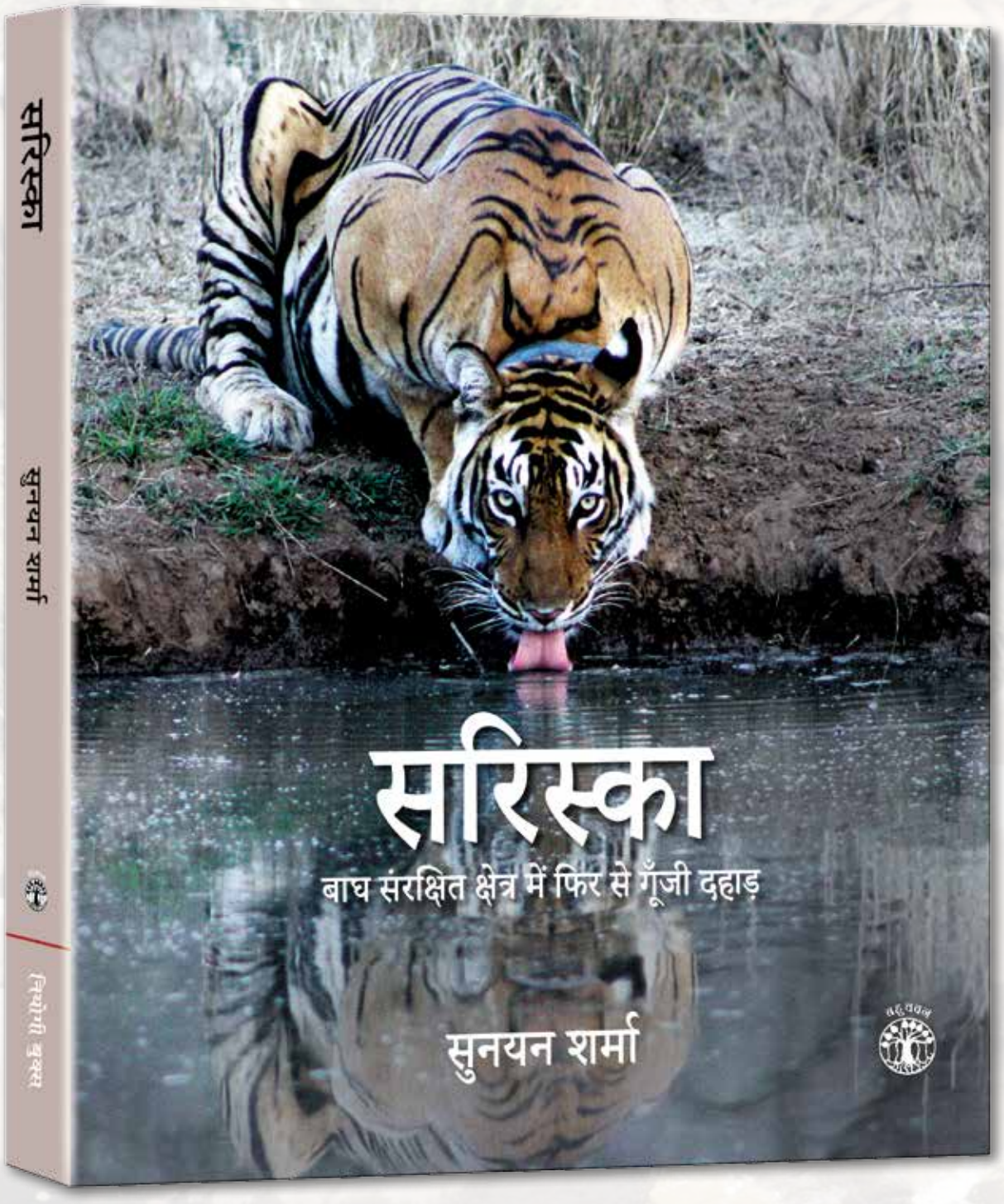

Published by
NIYOGI BOOKS
Fine publishing within reach

NIYOGI BOOKS PRIVATE LIMITED
Block D, Building No. 77, Okhla Industrial Area, Phase-1, New Delhi-110020, INDIA
Phone: 011 26816301, 26818960, Email: niyogibooks@gmail.com, Website: www.niyogibooksindia.com

NATURE & WILDLIFE
₹595
ISBN: 978-93-86906-74-8
Size: 190mm x 176mm; 240pp
130 gsm art paper (matt)
All colour; 148 photographs
Hardback with dust jacket

सरिस्का

बाघ संरक्षित क्षेत्र में फिर से गूँजी दहाड़

सुनयन शर्मा

राजस्थान स्थित सरिस्का भारतवर्ष के सर्वाधिक प्रसिद्ध बाघ संरक्षित क्षेत्रों में से एक रहा है। लगभग डेढ़ दशक पूर्व सारे बाघ, क्रूर शिकारियों के हाथों मारे गए। इस दुखद घटना का खुलासा हृदय विदारक था। इस घटना ने न सिर्फ भारत-वर्ष, बल्कि विश्व भर के वन्यजीव प्रेमियों को गहरा आघात पहुँचाया। असीमित वाद-विवाद, शंकाओं, तर्क-वितर्क, कानूनी व्यवधानों के चलते अन्ततः भारत के प्रधानमंत्री के हस्तक्षेप के बाद कुछ बाघ रणथम्भौर से सरिस्का में लाकर बसाए गए। यह विश्व में अपने किस्म का पहला ही प्रयोग था जो कि पूर्णतः सफल रहा। आज सरिस्का में एक दर्जन से अधिक बाघ हैं। उपरोक्त और ऐसे ही दूसरे अनेक अभिनव प्रयोगों का वर्णन इस पुस्तक में ऐसे व्यक्ति द्वारा किया गया है जो सीधे रूप में इनसे जुड़ा रहा है। लेखक तत्कालीन क्षेत्र निदेशक, सरिस्का ने पुस्तक में सीधे अपने स्वयं के द्वारा किए गए अनुभवों का वर्णन अत्यन्त रोमांचक शैली में किया है। शिकारियों की धर पकड़, खनन माफिया के विरुद्ध कड़ी काररवाई से लेकर वन्यजीवों के लिए दुरुह जंगलों में पीने के पानी के स्थलों के विकास व ऐसे घने जंगलों में शिकारियों पर प्रभावी नियंत्रण हेतु सुरक्षा चौकियाँ स्थापित करने तथा जंगल को नुकसान पहुँचाने वाले ग्रामीणों व राजनेताओं के साथ झड़पों आदि प्रसंगों का वर्णन बेबाक शैली में विस्तार से किया गया है। निश्चय ही वन्यजीवों पर उपलब्ध संक्षिप्त साहित्य की पूर्ति में इस पुस्तक का योगदान सदा अविस्मरणीय रहेगा। न सिर्फ वन्यजीव प्रेमियों व प्रशासकों, विशेषतया वन्यजीव अभ्यारण्यों/राष्ट्रीय उद्यानों के प्रबन्धकों, बल्कि पर्यावरण व सामाजिक सरोकारों से जुड़ी संस्थाओं तथा विद्यार्थियों के लिए भी यह पुस्तक एक अमूल्य निधि साबित होगी।

पहली बार बाघों का रणथम्भौर से सरिस्का सफलतापूर्वक स्थानांतरण।
राष्ट्रीय अभ्यारण्य के आसपास स्थित गाँवों का विस्थापन।
पुस्तक में वन्यजीव संरक्षण के प्रयास संबंधी चर्चा।

सुनयन शर्मा, भारतीय वन सेवा के एक सेवानिवृत्त अधिकारी, ने 1986-88 में मरु क्षेत्र के वन्यजीवों की सुरक्षा व प्रबन्ध हेतु वन्यजीव प्रतिपालक के रूप में सेवाएँ दीं। वर्ष 1988-91 में केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान, भरतपुर में अनुसंधान अधिकारी के रूप में एवं पुनः 2006-08 में इसके निदेशक के रूप में अपनी सेवाएँ दीं। अपने इस दूसरे कार्यकाल में उन्होंने विलायती बबूल (प्रोसोपिस ज्यूलीफ्लोरा) के राष्ट्रीय उद्यान से उन्मूलन के लिए एक विशिष्ट मौलिक योजना का सृजन किया। उन्होंने चिकसाना कैनाल व गोवर्धन ड्रेन का पानी भरतपुर राष्ट्रीय उद्यान में पहुँचाने वाली दो महत्वपूर्ण योजनाओं को जन्म दिया। यह तीनों योजनाएँ केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान को यूनेस्को (UNESCO) द्वारा प्रदत्त विश्व प्रकृति निधि के गौरवशाली अलंकरण को बचाए रखने में मील का पत्थर साबित हुईं। वर्ष 1991-96 में श्री शर्मा, सरिस्का बाघ परियोजना के क्षेत्र निदेशक रहे। पुनः उन्होंने 2008-10 में सरिस्का में अपनी सेवाएँ दीं। सरिस्का में चल रही सैकड़ों संगमरमर की खानें बन्द करवाने में उन्होंने प्रशंसनीय भूमिका अदा की। शिकारियों के हाथों बाघों का सफाया होने के बाद सरिस्का में बाघों को पुनर्वासित करने में मुख्य भूमिका निभाई। यह विश्व में अपने किस्म का पहला ही प्रयोग था। उन्होंने वन्यजीवों की सुरक्षा व संवर्द्धन के लिए अनेकों अनूठी योजनाएँ सृजित कीं। सुनयन शर्मा वर्तमान में सरिस्का टाइगर फाउंडेशन के अध्यक्ष हैं।